International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1129-1131

हड़प्पा से लेकर गुप्तकाल तक के विशेष संदर्भ में द्रव्यों की स्थितिः एक अध्ययन

सत्येन्द्र कुमार सिंह
शोध छात्र, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

प्राचीन भारत में अर्थ अथवा धन के उपार्जन से सम्बन्धित विषय के लिए 'वार्ता' शब्द प्रयोग में लाया जाता था कौटिल्य भी धन के लिए वार्ता शब्द का प्रयोग किया है। किसी देश की आर्थिक स्थिति तभी सुदृढ़ हो सकती है जब उसका व्यापार अन्य देशों से होता रहे प्राचीन काल में आयात–निर्यात काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे, आयात–निर्यात की जो वस्तुएं थी वह ज्यादातर औषधि, सोना, चांदी, कपड़ा, हीरे, जवाहरात आदि होते थे। हड़प्पा सभ्यता से मौर्यों के काल तक ज्यादा व्यापार पश्चिमी एशिया, अरब, यूनान, रोम आदि से होता था लेकिन मौर्यों के बाद गुप्त राजाओं के समय यह पूर्वी एशिया चीन, जावा, सुमात्रा, मलेशिया आदि से होने लगा था।

प्राचीन भारत का इतिहास काफी गौरवपूर्ण रहा है अन्य देशों की अपेक्षा, किसी देश या राज्य के उन्नति के लिए आवश्यक है अर्थ, देश या राज्य का मेरूदण्ड अर्थ ही होता है। चार पुरुषार्थों में अर्थ का महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्रायः व्यक्ति की मनःकांक्षा अनेकानेक वस्तुएं प्राप्त करने की होती है, जो अर्थ के सहयोग से ही पूर्णता को प्राप्त करती है। इस प्रकार अर्थ मनुष्य को भौतिक एवं लौकिक सुख प्रदान करने वाला कहा गया है। महाभारत में अर्थ के महत्ता एवं प्रतिष्ठा को स्वीकार किया गया है।

आयुष्या और अनायुष्य द्रव्यों के परिज्ञान से से आयुर्वेद का आरम्भ होता है। अतः द्रव्यों का काल निर्णय एक कठिन कार्य है। संभवतः यह आयुर्वेद के ही समान अनादि हैं। किन्तु व्यावहारिक अनुभव के द्वारा नये–नये द्रव्यों का परिज्ञान होता गया जिसके कारण क्रमशः उपयोगी द्रव्यों की संख्या में वृद्धि होती गई। इसके अतिरिक्त पारस्परिक सम्पर्क के कारण एक देश से दूसरे देश में द्रव्यों का आयात–निर्यात होता रहा है जिससे अन्य देशों में होने वाली औषधियों का प्रवेश अन्यत्र हुआ जो क्रम से आत्मसात कर ली गयी। भारत का सम्पर्क अन्य देशों से अत्यन्त प्राचीन काल से रहा है। असीरिया, बैबिलोन, मिस्र आदि देशों के साथ इसका व्यापारिक सम्पर्क चिरकाल से रहा है जिसके माध्यम से द्रव्यों का आदान–प्रदान होता रहा है। सुमेर और हड़प्पा सभ्यता का सीधा सम्पर्क 2300 ई0पू0 से कहा जाता है।[1] सिन्धु का बना सूती कपड़ा समुद्र मार्ग से बैबिलोन पहुँचता था। अथर्ववेद के 'तैमात, अलगी–विलगी, उरूगूला और ताणुव' शब्द भी बैबिलोन भाषा के कहे जाते थे।[2] इसकी पुष्टि बावेरू जातक से भी होता है। हड़प्पा संस्कृति में व्यापार का क्या स्थान था और वह किन स्थानों से होता था– इसका पता हम मोहन जोदड़ों और हड़प्पा से मिले रत्नों और धातुओं की जांच–पड़ताल के आधार पर कर सकते है। जैसे बलूचिस्तान से सेलखरी, अलबास्टर और स्टेटाइट आते थे और अफगानिस्तान या ईरान से चाँदी, सोना भी आता था, चांदी, शीशा और रांगा तो वहाँ से आते ही थे। फिरोजा और लाजवर्द ईरान अथवा अफगानिस्तान से आते थे। हेमिटाइट फारस की खाड़ी में हरमुज से आता था।[3]

दक्खिन में काठियावाड़ से शंख, अफीम, करकेतन, चेलसिड़नी और स्पटिक भी आया था। कराची अथवा काठियावाड़ से एक तरह की सूखी मछली आती थी। सिन्धु नदी के पूर्व, राजस्थान से तांबा, शीशा, जेस्पर, ब्लडस्टोन, हिरी, चालसिडनी और दूसरे पत्थर मनके बनाने के लिए आते थे। कश्मीर और हिमालय के जंगलों से देवदार की लकड़ी तथा दवा के लिए शिलाजीत और बारहसिंहे की सींगे आती थी पूर्वी तुर्किस्तान से पामीर, और बर्मा से यशब आता था।[4]

स्थल और जलमार्गों से द्रव्य एक देश से दूसरे देश जाते रहे हैं। मधुक और मरिच स्थल पथ से आते थे।[5]

सुप्पारक जातक से पता चलता है कि प्राचीन भारतीय नाविक एक ओर सुवर्णद्वीप (मलयेशिया) रत्नद्वीप (लंका) और दूसरी फारस की खाड़ी, लाल सागर और भूमध्य सागर का पता था।

अतः द्रव्यों के इतिहास के अध्ययन के लिए देश की प्राकृतिक संपदा के अतिरिक्त अन्य देशों के साथ सम्पर्क वाणिज्य के केन्द्र एवं मार्ग, समय–समय पर विदेशियों का आक्रमण एवं प्रभुत्व आदि बातों पर भी विचार करना आवश्यक होता है। वाङ्मय इस ज्ञान का प्रमुख स्रोत है। इसमें सांस्कृतिक वाङ्मय यात्रा–विवरण, पुरातात्विक विवरण अन्य देश का इतिहास, वाणिज्यवृत्त, राजनीतिक इतिहास आदि प्रमुख है।

ऋग्वेद में व्यापारियों के लिए साधारण शब्द वाणीज है[6] व्यापार अदला–बदली से चलता था जो कि यह कहना कठिन है कि व्यापार किन वस्तुओं का होता था। अथर्ववेद से इस बात का निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दूर्श (एक तरह का ऊनी कपड़ा) और पवस (चमड़ा) का व्यापार होता था।[7]

तत्कालीन व्यापार में मोल–भाव काफी होता था। वस्तु विनिमय के लिए गाय, बाद में शतमान सिक्कों का उपयोग होता था।

भारत के साथ असीरिया के व्यापारिक सम्बन्ध इस काल से भी पता चलता कि असीरिया के राजा सेन्नेचेरीब ने ई0पू0 704–681 अपने उपवन में कपास के पौधे लगाये थे।[8] नेब्बुस दन्नेजार (604–581 ई0पू0) के महल में सिन्धु के सहतीर मिले है। नवोदि (ई0पू0 565–538) द्वारा निर्मित चन्द्रमन्दिर में भारतीय सागवान के शहतीर मिले है जो पश्चिमी भारत में लाये गये थे।[9]

बैबिलोन में दक्षिण भारतीयों की अपनी एक बस्ती थी। निप्पुर के मुरूशु की कोठी के हिसाब की मिट्टी की तख्तियों से यह पता चलता है कि यह कोठी भारतीयों के साथ व्यापार करती थी। इसी व्यापारिक सम्बन्ध से कुछ शब्द– जैसे अरसि (चावल), यूनानि ओरिजा, करूर (दालचीनी) यूनानी कार्पियन, इंजिबेर (सोंठ), यूनानी जिगिबेरोस, चिप्पी (बड़ी पिंपल), यूनानी पपेरी तथा संस्कृत वैदूर्य (बिल्लौर), यूनानी बेरिल्लोस–यूनानी भाषा में आये है।[10]

वैदिक युग में समुद्र यात्रा विदित थी पर सूत्र काल में शायद जॉत–पॉत और छुआछूत के विचार से समुद्रयात्रा का निषेध हुआ। बौधायन धर्मसूत्र के अनुसार उत्तर के ब्राह्मण समुद्र यात्रा करते थे

पर शास्त्र विदित न होने से समुद्र यात्री जात–बाहर माने जाते थे। मनु भी शायद समुद्र यात्रा के पक्षपाती नहीं थे।[11] क्योंकि वे समुद्र यात्री के साथ कन्या के विवाह का आदेश नहीं देते। पर ये सब निषेध शायद ब्राह्मणों तक ही सीमित थे। बौद्ध साहित्य से तो पता चलता है कि समुद्र यात्रा एक साधारण बात थी। वैज्ञानिक इतिहास के दृष्टिकोण से तो भारत का इतिहास हखामनी शक्ति द्वारा सिन्धु और पंजाब के कुछ भाग पर अधिकार और सिकन्दर की विजय यात्रा से ही शुरू होता है। पांचवीं और छठवीं सदी ई0पू0 का काल जो था वह बुद्ध और महावीर का काल था। इस समय के उत्तर भारत में सोलह महाजनपदों की स्थापना हो चुंका था कुछ राजतन्त्रात्मक तथा कुछ गणतन्त्रात्मक थे। इन राज्यों का भी अन्तर्देशी तथा विदेशों से व्यापार होता था जिसमें अनेक वस्तु सम्मिलित होती थी, जिनकी सूचना हमें बौद्ध ग्रन्थ तथा जैन ग्रन्थों से प्राप्त होती है। बौद्ध जातकों के अनुसार पश्चिमी समुद्र तट पर भरूकच्छ सुप्पारक तथा सौवीर और पूर्वी समुद्र तट पर करम्बिय, गंभीर और सेरिव मुख्य बन्दरगाह थे जहाँ से जलमार्ग द्वारा वस्तुओं का आयात–निर्यात होता था। इस समय अन्तर्देशीय तथा विदेशी व्यापार में चन्दन का विशिष्ट स्थान था। अगरु, तगर तथा कालीयक की भी मांग थी। सिंहल और दूसरे देशों से नानाविध रत्न आते थे जिसमें नीलम, ज्योतिरस, सूर्यकांत, चन्द्रकांत, माणिक्य, वैदूर्य, हीरक आदि। इसके अतिरिक्त हाथीदाँत भी प्रचलित था।[12]

जैन वाङ्मय में व्यापार की वस्तुओं में केशर, अगर, चोआ, कस्तूरी, शंख और नमक का मुख्य उल्लेख मिलता है।[13] जैन साधु यात्रा में कुछ आहार द्रव्य, औषधियां, मलहम पट्टी साथ लेकर चलते थे।[14] उस समय ताम्रलिपि से सुवर्णद्वीप और कालियद्वीप (जंजीबार) तक जहाज बराबर चला करते थे। अनेक सुगन्धित द्रव्य, रत्न और सुवर्ण यहाँ आते थे और यहा से दालचीनी, मुरा, अगर, तगर, नख, कस्तूरी, जायफल, जावित्री, कूठ आदि द्रव्य बाहर भेजे जाते थे। ईरान से भी व्यापारिक सम्बन्ध था। वहाँ से शंख, चन्दन, अगर और रत्न भारत से जाते थे और ईरान से मंजीठ, सोना, चांदी, मोती, मूँगे भेजता था।[15]

मौर्य काल का समय आते–आते भारतीय इतिहास में काफी बदलाव आ चुका था इस समय चन्द्रगुप्त मौर्य के नेतृत्व में मौर्यों एक बहुत बड़ा भू–प्रदेश अपने अधीन कर लिया था, जिससे स्पष्ट है कि आयात–निर्यात पर भी काफी प्रभाव पड़ा होगा जिसकी सूचना हमें चन्द्रगुप्त के प्रधानमंत्री कौटिल्य के अर्थशास्त्र से प्राप्त होती है। अर्थशास्त्र में व्यापारिक वस्तुओं पर शुल्क का विधान है। इस प्रसंग में शंख, हीरक, मुक्ता, प्रवाल, रत्न, हरताल, मनःशिला, सिन्दूर, धातुए, चन्दन, अगुरू, कुटुक, मद्य, हाथीदांत, कपास, गन्ध, द्रव्य, औषध, लवण, क्षार, तैल आदि का उलेख है जिससे इनके प्रचलित व्यापार का बोध होता है। कौटिल्य के अनुसार मौर्य काल में रत्नों का व्यापार चरम सीमा पर था। अनेक रत्न, उपरत्न देश के कोने–कोने से तथा अनेक विदेश से आते थे। कीमती रत्न बलूचिस्तान के मूलादर्श और सिंहल से आते थे। बिल्लौर विन्ध्यपर्वत और मलाबार से आता था। नीलम और जमुनिया, लंका से आते थे। अलसकन्द नामक प्रवाल सिकन्दरिया से आता था। मौर्य युग में गन्ध द्रव्यों की भी बड़ी मांग थी। चन्दन के अनेक प्रकार दक्षिण भारत, जावा, सुमात्रा, तिमोर और मलयएशिया (सुवर्णद्वीप) तथा आसम से आते थे। अगरू आसाम, मलएशिया, हिन्दचीन और जावा से आता था।[16]

मौर्य काल के पश्चात पश्चिमी भारत में यूनानी, शक, कुषाण, पहलव आदि ने दूसरी सदी ई0पू0 से तीसरी सदी ई0 तक शासन किया इनमें सबसे ज्यादा वर्षों तक कुषाण राजवंश के राजाओं ने शासन किया। जिसका सबसे शक्तिशाली राजा कनिष्क था, कनिष्क का ही राजवैद्य चरक थे। जिन्हें चरक संहिता का रचनाकार माना जाता था।

कनिष्क का साम्राज्य उत्तर में पेशावर से लेकर बुखारा, समरकन्द और ताशकन्द तक फेला था, पूर्व में खोतान और सारनाथ तक उसकी सीमा था। कुषाणों और रोमन साम्राज्य का सम्बंध काफी दृढ़ था। इस काल में हाथीदांत, रेशमी कपड़ों, रत्न, जड़–बूटियों, मसाले आदि रोम को जाने लगे और वहाँ से सोना भारत में आने लगा। रोम में भारतीय मोती की बड़ी मांग थी। कालीमिर्च, जटामांसी, दालचीनी, कूठ और इलायची अधिकतर अरब यात्री स्थलमार्ग से लाते थे। औषध द्रव्यों में इनके अतिरिक्त सोठ, गुग्गुलु, लवंग, हींग, अखुरू का स्थान था। नील, शक्कर और तिल का तेल भी जाता था। भारतीय नीबू, केले, आलू और जर्दालू खाने तथा औषध के काम में आता था। हीरा, अकीक, स्फटिक, जमुनिया, वैदूर्य, नीलम, माणिक्य, पेरोजा आदि रत्नों की मांग रोम में बहुत थी। रोमन व्यापारी माली से मुरा और लोहबान का निर्यात करते थे। फारस की खाड़ी के बन्दरगाहों में भारत से तांबा, चन्दन, सागवान तथा शीशम की लकड़ियां आती थी। बाद के दिनों में रोम साम्राज्य के यूनानी व्यापारी क्रमशः सीधे भारत तक आने लगे। बार्बरिकोन के बन्दरगाह से कुष्ठ, गुग्गुलु, दारूहरिद्रा, जटामांसी, पिरोजा, लाजवर्द, नील आदि बाहर भेजे जाते थे।[17]

गुप्त युग भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है। इस युग में भारतीय संस्कृति भारत की सीमाओं को पार करके मध्य एशिया और स्वर्णद्वीप में छा गयी। हिन्द एशिया में गुप्त युग के पहले भी भारतीय उपनिवेश बन चुके थे, पर गुप्त युग में भारत और पूर्वी देशों का सांस्कृतिक और व्यापारिक सम्बंध और बढ़ गया। इस युग के संस्कृत साहित्य में पूर्वी द्वीप पुंज के लिए द्वीपांतर शब्द चल निकला था, जैसे– कालीदास ने इसके लिए (द्वीपांतरनीत लवंगपुष्पै) कहा है। इनका उल्लेख 'वामनपुराण' में मिलता है। कहा गया है कि भारतीयों ने युद्ध और वाणिज्य द्वारा पावन किया।

पंचतन्त्र में बहुत से व्यवसायों को बताने के बाद व्यापार की इसलिए तारीफ की गयी है कि उससे धन और इज्जत दोनों मिलती थी।[18] गुप्तयुग में चीन और भारत का सम्बन्ध और निकटतर हुआ जो सन् 61 ई0 में हान राजा मिंग के काल में स्थापित हुआ था। अधिक संख्या में भारतीय मलय–एशिया और हिन्द चीन भी जाने लगे। इस काल में ही भृगुकच्छ, सुपारा, कल्याण और ताम्रलिप्ति मुख्य बन्दरगाह थे। छठी शती में भी सिंहल उस समय व्यापार का प्रमुख केन्द्र था और समुद्री मार्ग में वह चीन और भारत की मध्यस्थता करता था। कल्याण का बन्दरगाह तांबा, तीसी और एरण्ड के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था तो सिन्ध के बन्दरगाह से कस्तूरी, एरण्ड और जटामांसी का व्यापार प्रमुख था।

ईसा पूर्व प्रथम शती में विन्ध्य पर्वत के दक्षिण में दो शक्तियां प्रबल हुई जिसमें ऊपरी दक्कन के सातवाहन और कलिंग के चेदि प्रमुख थे। चेदि राजवंश तो अल्पकालीन था परन्तु सातवाहन शक्ति का तीन शदियों तक निरन्तर उत्कर्ष होता रहा। सातवाहन वंश का प्रतापी राजा गौतमी पुत्र शतकर्णी था जिसका शासन काल 106 ई0 से 130 ई0 तक रहा।

सातवाहनों की राजधानी पैठन (प्रतिष्ठान) थी, जिसका सम्बंध दक्षिण के प्रसिद्ध नगर तेर (तगर) से सम्बद्ध था। जहाँ से दक्षिण का माल वहाँ पहुँचता था। भडौच (भृगुकच्छ) एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था। जहां निर्यात होने वाले द्रव्यों में जटामांसी, कुष्ठ, गुग्गुल, हाथीदांत, अकीक, दारूहरिद्रा (रसान्जन) पीपल आदि प्रमुख थे। आयातित द्रव्यों में तांबा, रांगा, सीसा, प्रवाल, पुखराज, तुरूष्क, संखिया आदि प्रमुख थे। दक्षिण में केरल का बन्दरगाह मुजिरिस

अत्यन्त प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था। यहा रोमन और अरब के जहाज लगे रहते थे। यहाँ से कालीमिर्च, तेजपत्ता, मोती, हाथीदांत, जटामांसी, रत्न, कछुए की खोपड़ियां आदि बाहर जाती थी, बाहर से सिंगरिफ आदि आता था। कोयम्बटूर में वेदूर्य की खाने थी। संभवतः चेरो (केरलियों) के हाथ में कालीमिर्च के व्यापार का अधिकार था, पाण्ड्यों के हाथों में मोती का और चोलों के हाथ में वैदूर्य था। कलिंग में भी हीरे मिलते थे और वहाँ से तेजपत्ता, जटामांसी और मोती बाहर भेजे जाते थे।

अरबों ने भारत से कपूर, हरड़, बहेड़ा, जायफल, नारियल, इमली, देवदारू इनके अतिरिक्त पान–सुपारी, शीतल चीनी, कालीयक आदि का भी निर्यात करना प्रारम्भ कर दिया था। मूंगा भमध्यसागर से, सीसा स्पेन, तांबा साइप्रस से रांगा लुसिटानिया से आता था।[19]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते है कि प्राचीन भारत का व्यापार प्राचीन समय में अनेकों देशों से होता था उस समय में अनेकों देशों से होता था। व्यापार का जो आर्थिक पक्ष था वह भारत के पक्ष में था क्योंकि रोम के साथ व्यापार में मसाले, हाथीदांत, औषधियां आदि निर्यात होती थी तथा आयात में वहाँ से सोना सहित अनेक वस्तुएं आती थी इसके अतिरिक्त अरब, बैविलोन, मिश्र, यूनान आदि से भी होता था। बाद के समय में भारत का व्यापार पूर्वी एशिया एवं दक्षिण एशिया के साथ चीन से ज्यादा होने लगी थी।

व्यापार की दृष्टि से प्राचीन भारत विश्व का गुरू था क्योंकि इस समय भारत के पास अच्छे बन्दरगाह थे ताम्रलिप्ती (बंगाल में), भड़ौच (गुजरात) आदि थे।

लोथल, हड़प्पा कालीन प्रसिद्ध बन्दरगाह था व्यापार करने के लिए उस समय व्यापारियों के पास खच्चर, घोड़े, हाथी, ऊँट, बैलगाड़ी सबसे प्रसिद्ध था। व्यापार के लिए उस समय पथों का निर्माण हो चुका था। जिसमें उत्तरा पथ एवं दक्षिणा पथ काफी प्रसिद्ध था।

संदर्भ

1. आचार्य प्रियव्रत शर्मा, द्रव्यगुण–विज्ञान, भाग–4, पृ0 224
2. मोतीचन्द्र, सार्थवाह, पृ0 31, 43
3. वही, पृ0 31
4. वही, पृ0 31
5. आचार्य प्रियव्रत शर्मा, द्रव्यगुण विज्ञान, भाग–4, पृ0 224
6. मोतीचन्द्र, सार्थवाह, पृ0 41
7. अथर्ववेद, 4/7/6
8. मोतीचन्द्र, सार्थवाह, पृ0 44
9. वही, पृ0 44
10. मनुस्मृति, 2/1/22
11. मोतीचन्द्र, सार्थवाह, पृ0 67
12. आचार्य प्रियव्रत शर्मा, द्रव्यगुण विज्ञान, भाग–4, पृ0 227
13. वही, पृ0 227
14. वही, पृ0 227
15. वही, पृ0 227
16. मोतीचन्द्र, सार्थवाह, पृ0 87
17. आचार्य प्रियव्रत शर्मा, द्रव्यगुण विज्ञान, भाग–4, पृ0 227
18. वही, पृ0 226
19. पंचतन्त्र, पृ0 6, मुम्बई, 1950